दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अक्षय तेमवाल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | ✓ |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	3	0	9	2	2	1

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 133 1/2 टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। अशुद्धियों पर ध्यान दें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) हरिमुख निरखि निमेख बिसारे।
ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे।।
घूँघटपट छाँड़े बीथिन महँ अहनिसि अटत उघारे।।
सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे।।
सूर, सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।
करै कहा ये कह्यों न मानत लोचन हठी हमारे।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास कृत 'भ्रमरगीत' से उद्धृत हैं। इनका संकलन शुक्ल ने 'भ्रमरगीत सार' में किया है।

प्रसंग : उद्धव के आने पर गोपियों की प्रतिक्रिया का वर्णन है।

व्याख्या :- गोपियाँ कहती हैं कि जिस दिन उद्धव आये थे उस दिन गोपियों की खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्हें अपने कृष्ण के आने की खुशी समान प्रतीत हो रही थी। वे अपने दुपटे, घूंघट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्याम को छोड़कर उद्धव से मिलने को बैचेन हो कर आ' उद्धव की ओर भागी जा रही थी।

विशेषताएँ

शिल्प सौन्दर्य

1. भाषा : ब्रजभाषा
2. काव्यरूप : न तो प्रबन्ध है न ही मुक्तक, सूर ने स्वयं इसे लीलापद कहा है।
3. रस : श्रृंगार रस
4. उत्प्रेक्षा अलंकार : मनो भरत दिगंबर xxx
5. रागानुगा भक्ति का स्वरूप प्रस्तुत है।
6. दर्शन : शुद्धाद्वैतवाद
7. भाव सौन्दर्य

गोपियों के स्वच्छन्द प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है सूर ने नारी को प्रेम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) फिरि फिरि चितु उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छबि-झौंरँ मै भयौ भौरे की नाव।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ बिहारीलाल कृत 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रसंग :- कवि श्रृंगार सौन्दर्य में नारी की अतिशयोक्तिपूर्ण सुन्दरता का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि नर्तकी लज्जा को त्याग कर दिया है। उसके अंग अंग की छवि इतनी सुन्दर है कि भी उसके पीछे व्यक्तियों की भीड़ लग गई है। जिस प्रकार फूल के पीछे भवरें की भीड़ लग जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

1. भाषा : ब्रजभाषा का सुन्दर, सहज और आकर्षक प्रयोग
2. अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग
3. रस योजना : शृंगार रस
4. काव्यरूप : मुक्तक
5. छन्द योजना : दोहा
6. 'फिरि फिरि' में पुनरावृत्ति हुई है जिससे अनुप्रास अलंकार की विद्यमानता साबित होती है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ महाप्राण निराला कृत 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत हैं।

प्रसंग :- जाम्बवान राम को तर्क देकर शक्ति की मौलिक कल्पना के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या :- जाम्बवान कहता है कि रावण पापी है, अन्यायी है फिर भी वह शक्ति की पूजा कर उसे प्राप्त कर पाया है। हे राम, तुम धर्म, सत्य और न्याय के मार्ग का अनुसरण कर रहे हो तुम शक्ति की आराधना करोगे तो उसे अवश्य हरा पावोगे। शक्ति की पूजा हेतु समर (रण क्षेत्र) छोड़ दो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और तब' तक पूजा करो जब तक शक्ति प्रसन्न न हो

विशेषताएँ

शिल्पगत

① खड़ी बोली हिन्दी का उच्चतम रूप प्रस्तुत है।

② काव्यरूप : प्रबन्धात्मक लम्बी कविता है। इसे डॉ निर्मला जैन ने 'शक्ति काव्य' भी कहा है।

③ छन्द योजना : शक्ति छन्द

④ गुण : ओज गुण

⑤ अंगीरस : वीर रस

⑥ तुकान्तता का पूरा ध्यान रखा है। जैसे त्रस्त, ध्वस्त।

⑦ प्रासंगिकता :- धर्म व अधर्म की लड़ाई काल और क्षेत्र का अतिक्रमण कर हर समय प्रासंगिक बन जाती है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दु:ख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसाद कृत 'कामायनी' से उद्धृत है।

प्रसंग :-

व्याख्या :- कवि कहता है कि मनु की दशा उनके और देवताओं के कार्यों का परिणाम है। अपने मंगलकारी कार्य को छोड़कर जब देवता अपनी इच्छा की प्राप्ति हेतु अग्रसर हुए तो उनका यह परिणाम हुआ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(1) विशेष
खड़ी बोली हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट
काव्य स्वरूप मौजूद है।

(2) काव्यरूप : प्रबन्ध काव्य

(3) डॉ नगेन्द्र ने इसे भावना प्रधान
महाकाव्य की संज्ञा दी है।

(4) अंगीरस : आनन्दमूलक शान्त रस

(5) प्रकृति का प्रयोग : नवल प्रभात

(6) अर्थ सम्प्रेषण हेतु अल्पविराम का
प्रयोग पहली पंक्ति के मध्य हुआ है

(7) दर्शन : प्रत्यभिज्ञ दर्शन

(8) लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग, अभिधा
की तुलना में अधिक हुआ है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ महाप्राण निराला कृत 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत है।

प्रसंग :- अंतिम इंदिवर (कमल) को न पाने पर राम के मन में आत्म धिक्कार का भाव।

व्याख्या :- राम मन में सोचता है कि ऐसे जीवन को धिक्कार है जो हमेशा विरोध सहता और सामाजिक, साहित्य के क्षेत्र में संघर्ष करता है। अपनी जीवन की पूर्ति हेतु साधन के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आगे राम अपनी प्रियतमा को याद करते हुए सोचता है कि सीता की मुक्ति न हो पाई। किन्तु आकस्म अ उसी समय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम का एक और मन अन्दर से संघर्ष करने को प्रेरित करता है

शिल्प सौन्दर्य

(1) भाषा : तत्समनिष्ठ खड़ी बोली
(2) शक्तिकाव्य तथा शक्ति छन्द का प्रयोग
(3) ~~ओज गुण सम्पन्न कविता।~~
(3) ~~राम को~~ मानो नाटकीयता का सुन्दर प्रयोग।
आकस्मिकता : एक और मन xxx

भाव सौन्दर्य

(1) राम का मानव रूप में दिखाया गया है। जिसमें आत्मधिक्कार जैसे भाव हैं
(2) सीता से राम का सम्बन्ध प्रिया का है जो ममता का प्रतीक है
(3) प्रासंगिकता : पंक्तियों से संघर्षरत रहने की प्रेरणा मिलती है।
"वह एक और xxx"

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्र· कविता के आमुख में प्रसाद ने स्वीकार किया है कि कविता में मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी की समाप्ति हुई है।

डॉ नगेन्द्र ने भी कामायनी की समीक्षा में दोनों भागों को स्वीकार कर इसे समासोक्ति कहा है जिसमें दोनों का महत्व लगभग बराबर है।

मनु को मानव के मन से तुलना कर, श्रद्धा को हृदय और ईड़ा को मस्तिष्क के समतुल्य माना गया है।

मानव के मन अर्थात मनु के अन्दर अच्छे भाव श्रद्धा के साथ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिखाए गये हैं तथा मनु की बढ़ती भोगवादी इच्छा और अनियंत्रित कामना उसे श्रद्धा से दूर इड़ा के पास ले जाती है।

इड़ा बुद्धि प्रधान, तर्क संगत और वैज्ञानिक गुणों से सम्पन्न है। वह मनु को उपभोक्तावादी और पूँजीवादी मानसिकता से प्रेरित करती है।

अंततः इच्छा, क्रिया और ज्ञान के समन्वय से मनु आनन्दमूलक शान्ति रस की प्राप्ति कर जनकल्याण में लग जाता है।

प्रस्तुत कहानी में मनु देवता तथा श्रद्धा गंधर्व लोक की कन्या है। इसलिए मानवता के विकास की शुरुआत इनके पुत्र मानव (कुमार) से मानी जाती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मानव पहले श्रद्धा के साथ रह कर अच्छे गुण को धारण करता है सत्य, त्याग, नियंत्रण, दान जैसे औदात्य गुण उसे श्रद्धा से प्राप्त होते हैं

बाद में श्रद्धा और मनु अपने पुत्र को इड़ा के पास वैज्ञानिक और तार्किक शक्ति के धारण करने हेतु, छोड़ देते हैं

डॉ नगेन्द्र ने मनु को मन, श्रद्धा को हृदय और इड़ा को बुद्धि मानकर समीक्षा की।

नामवर सिंह ने आधुनिक प्रतिमानों के आधार पर कामायनी की नई समीक्षा प्रस्तुत की है

कामायनी एक संश्लिष्ट अर्थ विधान की कविता है जिसकी अनेकों अर्थ और समीक्षा की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जा सकती है।

स्पष्टत: इसमें मानव के मन और मानवता के विकास की कहानी साथ-साथ चलती है। इसलिए इसे समाजोक्ति भी कहा गया है।

9/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अंगीरस की दृष्टि से कामायनी पर विचार कीजिये। 15

किसी भी रचना का अंगीरस निर्धारित करने का प्रमुख पारंपरिक आधार बहुव्याप्ति को माना गया है।

बहुव्याप्ति की दृष्टि से कामायनी में शृंगार रस सबसे अधिक मात्रा में उपलब्ध है। इसके अलावा शांत रस, भयानक रस, वीभत्स रस आदि भी मौजूद हैं।

अगर शृंगार रस को अंगीरस मान लिया जाए तो हम पाते हैं कि रचना के अंत में शृंगार रस मौजूद नहीं है।

परम्परागत कसौटियों के अनुसार फलागम के समय अंगीरस का मौजूद होना जरूरी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः इसे अंगीरस नहीं माना जा सकता। |

प्रसाद ने इस सन्दर्भ में कहा है कि बहुव्याप्ति रस फलागम के समान न हो तो, परिवर्ती रस को अंगीरस मान लेना चाहिए।

बहुव्याप्ति की दृष्टि से शान्त रस दूसरा स्थान ग्रहण करता है रचना के अन्त में मनु और श्रद्धा हिमालय पहुँचकर लोगों की सेवा में लगे हैं। यह ईच्छा, क्रिया और ज्ञान के समन्वय की स्थिति है जिसे समरसता भी कहा गया है।

इस स्थिति में आनन्दमूलक शांत रस मौजूद है। प्रसाद के अनुसार यही रचना का अंगीरस है।

और ...
8/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डॉ निर्मला जैन ने राम की शक्ति पूजा की समीक्षा कर, इस कविता को हिन्दी में शक्ति काव्य की शिखर रचना कहा है।

उन्होंने महाप्राण की प्रयोधर्मिता और प्रगतिशीलता की प्रशंसा करते हुए राम की शक्ति पूजा के छन्दों को 'शक्ति छन्द' और काव्य रूप को 'शक्ति काव्य' कहा है।

शक्ति काव्य की कसौटियों के आधार पर ~~श~~ राम की शक्ति पूजा का अंकन

(1) पहली कसौटी, कविता ओज गुण से सम्पन्न होना चाहिए। राम की शक्ति पूजा' ओज गुण और वीर रस से सम्पन्न है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राम की शक्ति और विजय का वर्णन, हनुमान की शक्ति आदि

(ii) भाषा शैली ओज गुण को सम्प्रेषित कर सके (तुलसी कसौटी)

इसके लिए निराला द्वारा प्रयुक्त तत्सम निष्ठ खड़ी बोली उत्तम है।

(iii) पाश्चात्य समीक्षक ड्रेन ने माना है कि काव्य की मूल समस्या शक्ति होनी चाहिए।

राम की शक्तिपूजा में मूल संवेदना और मूल समस्या दोनों शक्ति ही है।

जैसे "शक्ति की करो मौलिक कल्पना"

"आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

काव्य में अच्छाई - बुराई या सत्य असत्य का द्वन्द्व होना चाहिए।

राम की शक्तिपूजा में धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, प्रकाश-अंधकार जैसे अनेकों द्वन्द्व मौजूद है।

नैतिकता और अनैतिकता का द्वन्द्व केन्द्र में है।

कुलमिलाकर, डॉ निर्मला के शब्दों में 'राम की शक्ति पूजा' हिन्दी काव्य में शक्ति काव्य की कसौटियां निर्धारित करती है।

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'राम की शक्ति-पूजा' की उन भाषागत विशेषताओं का उद्‌घाटन कीजिये जिनके कारण वह काव्यभाषा की दृष्टि से खड़ी बोली हिन्दी की विशिष्ट उपलब्धि मानी जाती है? 20

'राम की शक्ति पूजा' की ख्याति अपने शक्ति काव्य होने के साथ-साथ भाषागत विशेषताओं से भी है। यह कविता एक साथ अनेकों अर्थ को सम्प्रेषित करती हैं, इसका मुख्य कारण उसकी भाषा शैली है।

भाषागत विशेषताएँ

① तत्समनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। ओज गुण और शक्ति काव्य के सम्प्रेषण में सामान्य भाषा का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

② लक्षणा शब्द शक्ति का अधिक प्रयोग ज्यादा हुआ है कहीं कहीं अभिधा शब्द शक्ति भी है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

13

बिम्ब योजना : रामविलास शर्मा ने कहा है कि बिम्ब योजना में यह कविता किसी भी भाषा की कविता से होड़ ले सकती है।

विराट बिम्ब

" हे अमानिशा। ××× "

कोमल बिम्ब

" नयनों का नयनों से ××× "

इसके अलावा सुकुमार और श्लिष्ट बिम्ब का प्रयोग भी किया है।

(4) प्रतीक योजना : काव्य में राम अनेकों प्रतीकों को धारण करता है। यह निराला, महात्मा गांधी का प्रतीक है सीता मुक्ति नारी मुक्ति आदि

(5) अनुभूति का काव्य है इसमें निराला के जीवन की अनुभूतियों का वर्णन है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(6) प्रकृति का प्रयोग छायावाद के अन्य कवियों के समान हुआ है। शक्ति को प्रकृति में खोजना...

(7) स्वच्छंदता वादी प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है।

"उद्धार प्रिया का हो न सका"

(8) काव्यशास्त्रीय नियमों को तोड़ती है।

(9) महाप्राण ने अपनी मौलिकता का प्रयोग कर समयानुसार जरूरतों को काव्य में समाहित किया है।

कुलमिलाकर, राम की शक्ति पूजा अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ-साथ अपनी भाषागत विशेषताओं के लिए भी प्रख्यात है।

11/20
अच्छा है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "निराला ने 'राम की शक्ति-पूजा' में अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या की है।" इस मत का अनावरण कीजिये। 15

आलोचकों ने 'राम की शक्ति पूजा' को 'कृतिवास रामायण' की नकल कहकर भी इसकी आलोचना की है, किन्तु सूक्ष्म विश्लेषण करने पर डॉ निर्मला जैन, दूधनाथ सिंह और डॉ रेखा जैसे समीक्षकों ने साबित किया है कि राम की शक्ति पूजा में महाप्राण ने समयानुसार प्रसंगों को अपनी मौलिकता से काव्य में स्थान प्रदान कराया है।

① निराला ने काव्य के माध्यम से अपने जीवन की अभिव्यक्ति की है।

② पौराणिक आख्यान के प्रयोग करने की वजह है कि गद्य के विस्फोट से महाकाव्य की जगह छायावाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में लम्बी कविता से ले लिया था इसलिए राम जैसे उदात्त चरित्र के माध्यम से वे चरित्रों की रचना की व्याख्या करे बचें।

③ समकालीन स्वतंत्रता संग्राम के नायक गांधी को राम के रूप में प्रयुक्त किया। देश के दो बड़े आंदोलन के विफल होने ~~को~~ और हिंसक प्रवृत्ति को भी उन्होंने स्थान दिया है।

④ हनुमान को सबसे शक्तिशाली बताया ~~फिर भी शक्ति की मौलिक कल्पना की क्योंकि हिंसा से परिणाम अच्छा नहीं हो सकता था।~~

⑤ शक्ति की मौलिक कल्पना भी महाप्राण ने हरयोग से की जो कृतिवास रामायण से भिन्न है इसका कारण यह है कि वे आम आदमी के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अन्दर विद्यमान शक्ति को जागृत करने का संकेत देना चाहते थे।

(6) कृतिवास रामायण में राम अत्यन्त भावुक हैं, २० बार रोते हैं किन्तु निराला के राम नियंत्रित भावुकता को दर्शाते हैं।

(7) जाम्बवान जैसे वृद्ध सेनापति द्वारा शक्ति की मौलिक कल्पना का आग्रह भी कृतिवास रामायण से भिन्न है। वहाँ शिव यह आग्रह करते हैं।

(8) नारी मुक्ति को केन्द्र में रख कर नारी को प्रिया कह के समता प्रदान करते हैं।

स्पष्टतः महाप्राण ने अपने समय के प्रसंगों जैसे स्वतंत्रता संग्राम, नारी संघर्ष और आत्मस्वीकृति को सम्प्रेषित करने हेतु प्रसंग का चयन और आवश्यकता अनुसार विस्तार भी किया।

6½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "कामायनी आधुनिक ढंग का महाकाव्य है।" विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डॉ नगेन्द्र ने कामायनी की समीक्षा करते समय परम्परागत महाकाव्य की कसौटियों को बदल कर आधुनिक काव्यों हेतु अपनी ~~मौली~~ मौलिक कसौटियां प्रस्तुत की।

उनके अनुसार आधुनिक काव्य में उदात्त चरित्र, उदात्त भाव, उदात्त कार्य, उदात्त कथानक तथा उदात्त शैली महाकाव्य की कसौटियां हैं।

कामायनी की समीक्षा करने पर हम पाते हैं कि इसके पीछे प्रसाद का उदात्त भाव निहित है।

मानव मन के द्वंद्व को काव्य में स्थान प्रदान कर अन्त में इच्छा, क्रिया और ज्ञान के समन्वय को स्थापित करना एक उदात्त कार्य है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कामायनी की नायक शुरु में उदात्त नहीं है। वह चिंताओं से ग्रस्त है तथा बाद में वह अनियंत्रित इच्छा को सम्प्रेषित करता है। अतः में वह श्रद्धा से पुनः मिलकर हिमालय जाता है। और आनन्दमूलक शान्त रस की प्राप्ति करता है। यहाँ वह जन सामान्य की सेवा करता है तथा उदात्त चरित्र को धारण करता है।

इसके कथानक में मानव विकास और मानव के मन की कहानी 15 सर्गों तक चलती है। कथानक में कसाव है तथा यह भाव सम्प्रेषित करने में सक्षम है।
अतः कथानक भी उदात्त को धारण करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य की शैली जिसे प्रसाद ने संस्कृतनिष्ठ भाषा से सींचा है इसमें अनेकों बिम्ब, प्रतीकों और अलंकारों का प्रयोग है।

स्पष्टत: कामायनी आधुनिक महाकाव्य की सारी कसौटियों को सम्प्रेषित करने मे सक्षम है

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

संदर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ मन्नू भण्डारी कृत महाभोज से उद्धृत है

प्रसंग :- महेश अपने और बिसू के पुराने वार्तालाप को पुलिस को बताता है

व्याख्या :- महेश कहता है कि बिसू उनसे नाराज रहता था और लड़ाई भी करता था क्योंकि पढ़े लिखे लोग आम जनता के शोषण के प्रति प्रतिबद्ध नहीं है यह से बिसू कहता है कि दिन दहाड़े यहाँ इतना अपराध हो रहा है और शिक्षित वर्ग कुछ नहीं कर रहा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ
खड़ी बोली हिन्दी का स्वच्छ, सरल और प्रवाहमयी प्रयोग

(2) अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग

(3) प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग
जैसे :..कौन लड़ेगा ?

(4) बुद्धिजीवी वर्ग पर व्यंग्य

(5) देशज शब्दों का प्रयोग
जैसे : दिन-दहाड़े, गुल्लम
फारसी शब्द : नाराज़

(6) राजनीतिक उपन्यास में अपराधों की को दर्शाया गया है

~~प्रासंगिक~~
प्रासंगिकता :- आज भी देश में यही हाल है। लोग अपराध की ओर से मुँह फेर लेते हैं

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

व्याख्या :- लेखक कहता है। प्रकृति के कण कण में स्वर की अभिव्यक्ति है पेड़ पौधे, झरते नदियाँ सभी स्वर को सम्प्रेषित करती हैं वे अपने पांडित्य पर कटाक्ष दर्शाते हैं कि इसकी वजह से स्वर खराब हो गया है अर्थात मनुष्य के व्यवहार में बुराई आ गई है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) खड़ी बोली हिन्दी का सरल प्रयोग

(2) सूत्र भाषा का प्रयोग दृष्टव्य है

(3) नाद सौन्दर्य की छटा विद्यमान है
जैसे : कल - कल

(4) प्रकृति वनस्पति और जीव जन्तुओं को गद्य में समाविष्ट कीया किया है

(5) पाठक की बोधगम्यता तथा आस्वादन के लिए अल्पविराम का सुन्दर प्रयोग हुआ है यह अर्थ सम्प्रेषण में सहायक है।

5

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश भारतेन्दु कृत 'भारत दुर्दशा' से उद्धृत है।

प्रसंग :- यह अंश नाटक के अंतिम भाग का है जहाँ भारत को उठाने के प्रयास में भारत दुर्दैव ये कहता है

व्याख्या :- भारतवर्ष डर के मारे बेहोश हो जाता है और वह बहुत उठाने पर भी नहीं उठता। भारत दुर्दैव कहता है जो जानबूझ कर सोता है उसे उठाना सम्भव नहीं वह देवता को उनकी अवस्था के लिए ~~उसकी लीला का~~ कारण मानता है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

① खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग हुआ है।

② आश्चर्यवाचक शैली ने गद्य की शिल्प बढ़ाया है —
जैसे : हा!, हा देव!

③ नवजागरण हेतु भारत की दयनीय अवस्था का वर्णन।

④ प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग किया गया है।
××× जगा सकेगा ?

⑤ दैविय शक्ति के रूप को भारत दुर्दशा का कारण बताया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, जमीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश मन्नू भण्डारी कृत 'महाभोज' से उद्धृत है।
इन पंक्तियों में गांव में फैले आंतक और राजनीतिक शक्तियों को दर्शाया गया है।

व्याख्या :- लेखक, पात्र के माध्यम से गाँव में फैले आतंक, रौब और नेताओं के डर को दर्शाता है।
उदाहरण के तौर पर वह बताता है कि लोग अपनी गाय-बैल, जमीन सब कुछ नेताओं और उनके गुण्डों के यहाँ रखते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष

① खड़ी बोली हिन्दी का सरल, सहज और प्रवाहमयी प्रयोग।

② अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग।

③ ज़ोरावर यहाँ शोषक वर्ग का प्रतीक है और सरपंच या नेताओं का प्रतीक है

④ बात को बढ़ा चढ़ा कर बताया गया है। अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण। ∴ आवाज़ और ज़बान तक बन्धक है

⑤ फारसी शब्दों का प्रयोग जैसे ज़बान

⑥ आश्चर्यवाचक शैली का प्रयोग जैसे: साहब।

5½/4

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ मन्नू भंडारी कृत 'महाभोज' से उद्धृत है।

प्रसंग :- दा साहब लखन से कहते हैं कि अपनी महत्वाकांक्षाओं को नियंत्रित करो।

व्याख्या :- दा साहब लखन से कहते हैं कि लखन चुनाव जीतने के स्वार्थ में अखबारों को प्रतिबंधित करने के लिए बोल रहा है। दा साहब आगे कहते हैं कि हमें अपने चरित्र को देखने ~~देखनी~~ का साहस होना चाहिए तथा समय-समय पर उसका अंकन भी करना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

सूत्र भाषा का प्रयोग

तुम मीत नहीं तुम्हारा स्वार्थ x x ~.

(1) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग

(3) फारसी शब्द : अखबारों

(4) संस्कृत शब्द : स्वार्थ

(5) दा साहब के उपरी चरित्र को गद्य ने दिखलाया है। उनका दूसरा रूप और है जो राजनीतिक स्वार्थ के लिए पत्रकार को रिश्वत देता है।

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) आपके मत से हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास कौन-सा है और क्यों? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंचलिक उपन्यास धारा की शांकेतिक शुरुआत हिन्दी साहित्य में 'शिवपूजन सहाय' के 'देहाती दुनिया' से मानी गई है किन्तु रेणु के पहले उपन्यास "मैला आँचल" को ही सही अर्थों में आंचलिक उपन्यास ~~कहा गया~~ माना गया है।

सांकेतिक

आंचलिक

अन्य आंचलिक उपन्यास
रेणु : परती परिकता।
नागार्जुन : बलचनमा
उदयशंकर भट्ट : सागर, लहरें और मनुष्य
भैरव प्रसाद : गंगा मैया

परिकथा

हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की तुलना करते हैं तो हम पाते है कि नागार्जुन और उदयशंकर भट्ट के उपन्यास आंचलिक उपन्यास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की सारी कसौटियों को पूरा नहीं कर पाते। 'सागर ~~तथा~~ लहरें और मनुष्य' बम्बई के मछुआरों की बस्ती की कथा है जो अपने अंचल के गुणों को बघारते हैं।

ऑंचलिक उपन्यास की कसौटियों

(1) नायकत्व : यह परम्परागत नायकत्व को ध्वस्त करता है तथा उपन्यास का नायक ~~अंग~~ अँचल ही बनकर सामने आता है।

मैला आँचल में विश्लेषण करते पर डॉ प्रशांत, बावनदास और अंचल में नायकत्व को अंचल ही धारण करता है।

(2) अंचल की भाषा : मैला आंचल में देशज शब्दों जैसे "गमकौआ साबुन"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'धमाधम पंचायत'' आदि का ~~उपयोग~~ प्रयोग हुआ है

(3) अंग्रेजी के विकृत और शब्दों का प्रयोग : भैसचरमन (Vice chairman) रायबरेली (Library)

(4) अंचल के सामाजिक और सांस्कृतिक सभी पक्षों को समाहित करता है मैला आँचल में बिदापद के गीत, बटुजई के गीत, जार आदिन का खेल.

(5) ~~आज~~ उपन्यास में भौगोलिक और राजनीतिक परिस्थितियों की समाविष्टि : - मैला ~~आज~~ आँचल अपने गाँव की राजनीतिक परिस्थितियों को उजागर करने में सफल रहा

(6) गाँव की ~~भ~~ भाषा में प्रयोग मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग - "माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठंडा कर दे।।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नाद सौंदर्य या ध्वन्यात्मकता, जो शुक्ल के अनुसार रचना की आयु बढ़ाता है।
"डिम डिमक डिमक"
"गिड़ गिड़ गिड़ धा गिड़धा गिड़धा"

यह सभी कसौटियां सबसे अच्छे तरह से मैला आंचल में दिखाई देती है। रेणु का दूसरा उपन्यास 'परती परिकथा' भी 'मैला आँचल' की तरह नायकत्व धारण नहीं कर पाया इसलिए मैला आँचल ही सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास है

11/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) राजनीति और अपराध के आपसी संबंधों की औपन्यासिक प्रस्तुति के रूप में 'महाभोज' पर विचार कीजिये। 15

मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित उपन्यास 'महाभोज' को राजनीतिक उपन्यास की संज्ञा प्राप्त है

उपन्यास की शुरुआत होती है "लावारिश लाश को गिद्ध xxx" जोरावर द्वारा बिसू की हत्या एक अपराध है और यहीं से राजनीति शुरू होती है"

यह उपन्यास बेलछी कांड के बाद लिखा गया है। तथा उसको ध्यान में रख कर दलितों और ~~शोषक~~ शोषित वर्गों की वेदना को ~~आम~~ सम्प्रेषित किया गया है

बिसू की हत्या को राजनीतिक मुद्दा बनाया जाता है दा साहब इसका पूरा फायदा उठाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जनता को अपने पक्ष में करने के लिए दा साहब बिमू के पिता को कार में बिठाते हैं।

इसके पश्चात उनको भरोसा दिलाते हैं कि गुनहगार को सजा होगी। 'वोट बैंक' की राजनीति का "नग्न" नंगा सच सबके सामने आता है।

पत्रकार भी सरकारी कोटा मिलने से शांत हो जाता है तथा डी.आई.जी. सिन्हा को भी प्रमोशन मिल जाता है।

सभी चुनाव जीत कर दा साहब, सिन्हा, पत्रकार सभी बिमू की मौत का महाभोज करते हुए अंत में दिखाया गया है।

बिसू का मित्र बिन्दा को फंसा कर ~~खत्म~~ सजा दी जाती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रांति की आग। सिर्फ सनसनी में बाकी रह जाती है।

स्पष्टत: उपन्यास में राजनीति और अपराध के सम्बन्ध को उजागर किया है।

8/15

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के नारी-चिन्तन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी रचना में लेखक अपनी विचारधारा को सम्प्रेषित कर ही देता है उपन्यास का मूल भाव नारी की अभिव्यक्ति तथा समाज में स्वतंत्रता है किन्तु इसे सम्प्रेषित करने हेतु यशपाल ने ऐतिहासिक ढाँचा का सहारा लेकर नारी चिंतन किया है

उपन्यास की नायिका दिव्या पहली नायक परम्परा को ही ध्वस्त करती है। अभी तक हिन्दी में लगभग अधिकतम उपन्यास में पुरुष ही नायकत्व को धारण करता है

उपन्यास के शुरुआत में दिव्या एक उच्च कुल की नारी है कुल की मर्यादा को बचाने के लिए वह अपने प्रेम और पुत्र की रक्षा हेतु सागल छोड़ देती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यहाँ नारी का त्याग भाव सामने आया है वास्तव में वह नारी की परतंत्रता को सम्प्रेषित करती है तथा बौद्ध सम्प्रदाय में न अपनाने की वजह से वह स्वतंत्र नारी के रूप में वेश्या वृति धारण करती है

अंत में वह मारिशा को चुन कर नारी को समाज में पुरुष के समकक्ष समानता के अधिकार को दर्शाती है।

पूरे उपन्यास में नारी की समस्याओं और किसी न किसी माध्यम से इसकी समाधान प्रस्तुत किया गया है

7/15

बेहतर लगा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation